Research Paper - fgUnh

ryukRed v/;;u ,d fopkj

* Mk- lk- f=o.kh lkuku

ikLrkfod

भारत बहुभाषी, बहुजाति,बहुधर्मीय,बहुप्रान्तीय लोंगों का विशाल जनसमुह है, जो विविधता में एकता का सुन्दर–दर्शन कराता है। अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा हिन्दीभाषा कुछ विवादोंके बाद भी लोगों को प्रिय है। ' हिन्दी भाषा * अखण्ड भारत को जोडने की एक कडी रही है । हिन्दी भाषा भारतीय सभी अहिन्दी प्रान्तों में आसानीसे रची–बसी है । अन्य विभिन्न भारतीय भाषाओं के सशक्त उपस्थिति में राष्ट्रभाषा हिन्दी का सहजतासे आवागमन है। हर भारतवासी इसे सुनता समझता है और आत्मसात करता है, परिणामतः हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा का पद सुशोभित करता है । किन्तु फिरभी एक व्यक्ति या एक साहित्यकार यह दृढतापूर्वक दावा नहीं कर सकता कि वह समुचे भारत को जानता पहचानता है वह सभी बातों से भिज्ञ है , क्योंकि आसपडोसमेंही ऐसी भाषा होती है कि उसे समझना कठीण है । इनागिना साहित्यकारही वटवृक्ष के समान विशाल रूप धारण कर चारों दिशाओं में अपनी जडे यूँ फैलाता है कि सभी ओर से वह रस संचित करता है और अन्योंको रसप्लावित करता है । कहने का तात्पर्य यह है कि एखाद कृति या कृतिकार अपनी सीमा लॉघकर सबके हृदय मे घर करता है। ऐसेही सुन्दर रचनाएँ, संपन्न ज्ञान, नैतिक आचार–विचार ले कर चलनेवाला विभिन्न भाषाई ज्ञान अपनी सीमा नही त्यागता, उस ज्ञान से अन्य लोग वंचित रह जाते है । हमारी एक दूसरे की कला, साहित्य, पध्दतियॉ, आचार, अच्छाईयॉ हमारी संस्कृति, हमारा ज्ञान भण्डार एकही भाषा में सिमट कर रहा जाता है। अन्य सभी भाषी–गण उससे अनभिज्ञ रहते है । ऐसा न हो इसलिए अन्य भाषाओंकी अपेक्षा हिन्दी भाषा जो सब प्रदेशोंमे पहुॅच गयी है उसके माध्यमसे सभी प्रान्तोंके मातृभाषिक साहित्यकार अपनी अपनी मातृभाषा में प्रवीण रहतेही है साथ में हिन्दीसे भी परिचित है वे लोग 'तुलनात्मक अध्ययन' द्वारा अर्थात मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा मिलकर इस कार्य को उॅचाईपर पहुॅचा सकते है। भारतके विभिन्न प्रदेशों का साहित्य, इतिहास,संस्कृति,ज्ञान विज्ञान से गहरा नाता जोड सकते है।

'' तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से भारत के सन्दर्भ में हम एकता के उन सूत्रों की तलाश करना चाहते है, जो सांस्कृतिक तथा सामाजिक जमीन की एकता है ''।

fo'k;

भारतीय भाषाओंका एक दूसरी से धनिष्ठ संवाद होना अनिवार्य है, ''अंग्रेजी या हिन्दी इन दो भाषाओंका संपूर्ण भारत में बोली जानेवाली महत्वपूर्ण भाषाओं से ठिक ठिक संवाद है फिर भी अन्य भारतीय भाषाओंका एक दूसरीसे विशेष संवाद नही होता, यह सत्य है । अधिक क्या कहे परन्तु कई बार अपनेअपने राज्य की सीमा के करीब की भाषाओं से भी विशेष संबंध नही रहता । महाराष्ट्र में मुंबई के लोगों का गुजराती से थोडाबहुत संबंध आता है परन्तु अपनी ही सीमापर स्थित कोंकणी, कन्नड या तेलगु भाषा की जानकारी हमे नही रहती'' अर्थात पडोसी भाषा की लोकसंस्कृति, साहित्य, संगीत आदि में क्या विकसित हो रहा क्या परिवर्तित हो रहा इन सब बातों से हम अनभिज्ञ रहते है और न हमें उसमें कोई विशेष रूचि लेनेकी फुर्सत है, भूमण्डलीकरण के इस दौर में हमारे पडोस में झॉकने की मानों जरूरत ही नही एक ओर सारे ब्रहमाण्ड की खोज में हम लगे हुये है परन्तु पडोसमें बोली जानेवाली भाषाओं के साहित्य से हमारा कोई नाता नही है । नाता जोडने हेतु ''तुलनात्मक अध्ययन'' हमारी सहायता करेगा रूचि वर्धित करेगा तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओंके साहित्य की पहचान करायेगा, और यह शुभकार्य हिन्दीभाषा के माध्यम से संभव होगा । क्योंकि हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के नाते भारत के सभी प्रदेशों के साहित्यकार एवं विद्वान इसे जानते है समझते है अतः वे अपनी मातृभाषा के साहित्य को हिन्दी द्वारा तुलनात्मक अध्ययन कर भारतीय भाषाओं को जोडने का स्वप्न पूरा कर सकते है।

''भारतीय साहित्य की आन्तरिक एकरूपता तुलनात्मक अध्ययन से अर्थात दो या दो से अधिक साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन से राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर कई साहित्य एवं संस्कृतियों के बीच परता के बोध को घटाकर परस्परता के बोध को जगाया जा सकता है। आशय यह है कि हिन्दी साहित्य को विचार परिधि के केन्द्र में रखकर भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए भारत के बहुभाषी और विविधतामय समाज की आधारभूत सांस्कृतिक चेतना तथा साहित्यिक संवेदना की मूलभूत एकात्मता की पहचान को उजागर किया जा सकता है और भारतीय सन्दर्भमें

साहित्य, संस्कृति की प्रान्तीय, क्षेत्रीय अथवा ऑचलिक संकीर्णताओं को दूर किया जा सकता है'' । इस सन्दर्भ में सोचने पर प्रश्न निर्माण होता है कि तुलना रचनाओंकी हो या रचनाकारोंकी या केवल उत्कृष्ट साहित्यकी या तत्कालीन प्रेरक परिस्थितियों की तो विचार करनेपर ऐसा प्रतीत होता है कि तुलना उत्कृष्ट रचनाओं की रचनाकारों की भी तथा तत्कालीन प्रेरक परिस्थितियोंकी भी होना चाहिये जिससे भिन्न समाज,भिन्न संस्कृति,भिन्न परम्पराऍ तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों का दर्शन देनेवाला साहित्य निर्माण हो जो उन भाषाओं के बीच छिपे महत्वपूर्ण अंशोंको उजागर कर सके । तुलनात्मक अध्ययन केवल साम्य–वैषम्य के बिन्दूपर न रहे, आज तक एक भाषा के साहित्य सामग्री पर दूसरी भाषा के साहित्य की तुलना केवल साम्य वैषम्य तक ही रही है । रचनाका बहिरंग और अन्तरंग दोनो भी निखर कर बाहर आने चाहिये जिससे उस रचयिता एवं रचना का पूरी तरह सौन्दर्य अभिलक्षित हो आये एवं पाठकों को वह आकर्षित कर रूचि बढाने का कार्य करे। भारतीय भाषाओं की सक्षम उत्कृष्ट रचनाऍ जो भारतीय जीवन की मौल्यवान धरोहर है उन रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन स्तर उॅचा उठाना चाहिऐ। सृजन, अनुसृजन, अनुवाद के साथ साथ तुलनात्मक कार्य विपुल मात्रामे होना चाहिए। भूमण्डलीकरण के युग में हिन्दी को एक अहंम भूमिका का निर्वाह करना होगा । उसी प्रकार हमारी प्राचीन तथा प्रादेशीक संस्कृति, हमारी प्रादेशीक भाषाऍ, देशी परम्पराऍ, हमारा परिवेश, हमारे निवेश को बचानेवाला साहित्य निर्माण हो।

आज अनुवाद कार्य दिनोदिन बढ रहा है। नयी वैज्ञानिक टेक्नॉलाजी इस अनुवाद के माध्यम से हम तक पहुॅचती है किन्तु कुछ ही मात्रामें । वैसे ''संपर्क भाषा तथा आंतर्राष्ट्रीय भाषा के निर्माण में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । इसलिये अनुवाद आजकी सर्वाधिक चर्चित एवं महत्वपूर्ण विधा है। भाषा, साहित्य, दर्शन, ज्ञान–विज्ञानकी श्रीवृध्दि में अनुवाद का महत्व अनन्य साधारण रूप में देखा जा सकता है'', पर अनुवाद की सीमा संकुचित है। अनुवाद भाषाका बदलाव मात्र है अनुवाद विवेचन,विश्लेषण परीक्षक, खोज, निष्कर्ष प्रस्तुत नही करता ज्यौं का त्यौं प्रस्तुत करता है। इस तुलनामें तुलनात्मक अध्ययन इन सभी स्थितियों से गुजरता है । सीमा का विस्तार तुलनात्मक साहित्य में ही सफलता पूर्वक देखा जाता है । 'तुलनात्मक अध्ययन' का मूल्य अनुवाद प्रक्रिया से कई गुना अधिक है।

तुलनात्मक अध्ययन करते समय जरूर ध्यान देने योग्य है कि '' दो भिन्न भाषाओं के साहित्यका उपरी तौर पर अध्ययन तो हम कर लेंगे,उनका तुलनात्मक विश्लेषण भी करेंगे परन्तु हमारा यह अध्ययन कितना पूर्ण या कितना प्रामाणिक है, हम विश्वास के साथ यह नहीं बता पाऍगे । दो भिन्न भाषाओं की कृतियों के मूल में जो सामाजिक प्रेरणाऍ, सामाजिक विकास की उॅची–नीची, सम–विषम स्थितियॉ है उनसे हमारा गहरा परिचय नही है''। अर्थात गहराई पूर्ण अध्ययन से ही यह सम्भव होगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 'तुलनात्मक अध्ययन' की ओर विशेष लक्ष्य केन्द्रीत करना अनिवार्य है ।

fu"d"k

तुलनात्मक अध्ययन' राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य भाषाओं को समृध्द एवं प्रसिध्द करेगा साहित्य को प्रादेशिक सीमा से निकाल कर विस्तृत राष्ट्र तथा सीमा तक पहुॅचायेगा।

इस कार्य में राष्ट्रभाषा का कार्य सराहनीय होगा, क्योकि एकमात्र भारतीय राष्ट्रभाषा ही यह बोझ उठा सकने में सक्षम है?। तुलनात्मक अध्ययन देशमें विभिन्न भाषाओं को समझने में सहायक सिध्द होगा ।

हमारी प्रादेशिक भाषा, भाषाओंका इतिहास, साहित्य का इतिहास, विविध भाषी लोगों के समाजोंका इतिहास इत्यादि से हमारा परिचय बढेगा ।

तुलनात्मक कृतियों के मूल में जो प्रेरणाऍ, सामाजिक विकासकी उॅची–नीची,सम–विषम स्थितियॉ से हमारा गहरा परिचय होगा ।

तुलनात्मक अध्ययन से दो भाषाओं, दो रीति–रिवाजों, धर्म, चिंतन, वैचारिकता, परम्पराओं, ज्ञान–विज्ञान विकास, दर्शन तत्व, व्यवसाय, अध्यात्म, शिक्षा आदि का परिचय एवं दर्शन होगा । वास्तव में हिन्दी भाषा देशके लिये कल्पवृक्ष से कम नही है । उससे जो प्राप्त करना चाहोंगे अवश्य प्राप्त होगा ।

विविध भाषाओं के साहित्यमें मानवजाति की बौध्दिक, नैतिक जीवन की अभिव्यक्ति समाहित है । भाषा एवं उसका साहित्य समाज सापेक्ष होता है अतः तुलनात्मक अध्ययन विभिन्न समाज समुदाय का यथार्थ दर्शन कराएगा।

l{kk

जिस प्रकार भारतीय नदियों को एक कर संपूर्ण भारत को ''नॅशनल वाटर ग्रिड'' की स्थापना पर विचार किया जा रहा है ठिक ऐसेही संपूर्ण भारत की एकता के लिए अर्थात विखण्डन की प्रवृत्ति से मुक्ति पाने हेतु एवं सुदृढ और समृध्द भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिये भावनात्मक एकता आवश्यक है इसीलिए भारतीय साहित्य की आन्तरिक एकता निर्माण कर एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध स्थापित कर भारतीय साहित्यकार या लेखक अपने देश की विभिन्न भगिनी भाषाओं के साहित्य से परिचित होंगे तो उससे हिन्दी साहित्य का ज्ञान भण्डार समृध्द तो होगा ही देशकी आन्तरिक एकरूपता,

धनिष्ठता बढकर भावनात्मक एकता बढेगी एवं राष्ट्र को पुष्टता प्राप्त होगी इसी धारामें पूरब और पश्चिम को भी समाहित कर संपूर्ण जगत में आन्तरिक भावों, विचारों, ज्ञान विज्ञान एवं भक्ति से विश्वबंधुत्व का निर्माण होगा। इस महान कार्य के लिये एकमात्र राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से 'तुलनात्मक अध्ययन' का महत्वपूर्ण कार्य होना अनिवार्य है ।

सभी साहित्यकारों पर यह एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है और सब मिलकर इसे पूर्ण किया जाय । यह हमारे सामने एक आव्हान है। इसे स्वीकार करना हमारा कर्तव्य है।

* ikpk;] fgUnh foHkkx] Jherh l- jk- ekgrk efgyk egkfo|ky;] [kkexko] ft- cykMk.kk] egkjk"V

संदर्भ ग्रंथ

1 प्रो. गोपीनाथन जी. संपादक बहुवचन पृष्ठ क 61 कानपूर 2000
2 नीरजा लोकसत्ता, पृष्ठ क 2नवम्बर 2012 लोकरंग
3 प्रो. गोपीनाथन जी. संपादक बहुवचन पृष्ठ क 57 कानपूर जनवरी,मार्च 2006
4 डॉ. देसाई बापूराव स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पृष्ठ क. 122 कानपूर 2000 साहित्यका इतिहास
5 प्रो. गोपीनाथन जी. संपादक बहुवचन पृष्ठ क 60 कानपूर 2000
6 प्रो. गोपीनाथन जी. संपादक बहुवचन पृष्ठ क 62 कानपूर 2000